موضوع الخطبة: توقير الصحابة من أصول اعتقاد أهل السنة والجماعة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم: طارق بدر السنابلي (@Ghiras_4T)

सहाबा का सम्मान

अहले सुन्नत वल जमात की अटूट धारणा

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह ताला की है, एवं सबसे उत्तम सिद्धांत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का सिद्धांत है और सब से घृणात्मक चीज धर्म में अविष्कार की हुई बिदअतें (नवाचार) हैं. हर नवोन्मेष गुमराही है, हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है.

ए मुसलमानो!

अल्लाह त-आला से भय करो एवं उसी का डर सदैव अपने ह्रदय में जीवित रखो. उसी की आज्ञाकारीता करो एवं उस के आज्ञा का उल्लंघन करने से बचो. ध्यान रखो कि अहले सुन्नत वल जमात के बुनियादी धारणाओं में यह बात सम्मिलित है कि उनके सहाबियों (साथियों) की प्रतिष्ठा का ध्यान रखा जाए, एवं उनका सम्मान किया जाए, उनके साथ उत्तम व्यवहार किया जाए, उनके अधिकारों का ज्ञात रखा जाए, उनकी आज्ञाकारीता की जाए,

उनकी प्रशंसा उत्तम रूप में की जाए उनके क्षमा के लिए प्रार्थना की जाए उनके व्यक्तिगत झगड़ों के प्रति चुपचाप रहा जाए उनके शत्रुओं से शत्रुता रखी जाए उनमें से किसी के प्रति जो नकारात्मक संदेश फैले हुए हैं जिन्हें कुछ इतिहासकारों, अज्ञानी कथावाचकों, गुमराह शीओं एवं नवोन्मेष के पालन करने वालों ने प्रतिलिपि की है, उन से दूर रहा जाए.

क्योंकि यह लोग इसी प्रकार के संदेशों को फैलाने की योग्यता रखते हैं. किसी सहाबी को घृणात्मक रूप से याद ना किया जाए, नाही उनके किसी कार्य का उल्लंघन किया जाए, बल्कि उनके सकारात्मक रूपों को उजागर किया जाए एवं जो भी उनकी अच्छाइयां हैं उनकी प्रशंसा की जाएं, इसके अतिरिक्त जो भी अनुपयुक्त चीजें हैं उन पर चुप रहा जाए.

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहमतुल्लाही अलैह का वर्णन है: " अहले सुन्नत वल जमात के सिद्धांतों में से है कि उनके हृदय एवं जीभ सहाबा के प्रति पूर्णतः शुद्ध होती हैं. जैसा कि अल्लाह ताला ने इनके बारे में इस आयते करीमा में वर्णन किया:

(وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ) (١٠: سورة الحشر)

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पहले ईमान स्वीकार चुके हैं, और इमान रखने वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल, ए हमारे रब! नि: संदेह तू बहुत बड़ा दयालु एवं कृपालु है."

ए मोमिनो! सहाबा को अन्य व्यक्तियों पर यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि अल्लाह ताला ने पूर्ण मनुष्य में उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का संगी बनाया, उन्हें सांसारिक जीवन में आप का दर्शन करके मन को शांति प्रदान करने, आपके मुंह से पवित्र हदीस सुनने, आपसे धार्मिक रेखाओं को जानने, एवं आप जिन प्रकाश एवं निर्देश के साथ भेजे गए उन्हें पूर्ण रूप से संसार के कोने कोने तक पहुंचाने का काम दे कर विशेष सम्मान प्रदान किया.

इस कारणवश आप की संगत में रहने, आपके साथ जिहाद करने, इस्लाम के प्रचार प्रसार करने एवं अन्य मनुष्यों को इसकी ओर निमंत्रण देने के कारण उन्हें बड़ी सफलता दी गई इन के पश्चात आने वालों को जितना सवाब मिलेगा उन्हें भी उतना ही सवाब मिलेगा क्योंकि उन्होंने ही इनको सत्य का मार्ग दर्शन कराया है और यह बात सभी जानते हैं कि जो व्यक्ति सच एवं सीधे मार्ग का निर्देश कराता है या उसकी ओर लोगों को निमंत्रण देता है उसे उतना ही सवाब मिलता है जितना उस पर चलने वाले को मिलता है और इस सवाब के कारण उन आज्ञाकारीयों के सवाब में कोई कटौती नहीं होती है.

ए मोमिनो! अल्लाह ताला ने सहाबा की बहुत अधिक प्रशंसा की है एवं उनके गुणों को बयान किया है तौरात, इंजील एवं क़ुरआन में उनको उच्च स्थान प्रदान किया है, उनको बड़ी सफलता तथा माफ़ी का विश्वास दिलाया है, अल्लाह ताला का वर्णन है:

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّـهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ) فَضْلًا مِّنَ اللَّـهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّـهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا(٢٩: سورة الفتح)

अर्थात: "मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम अल्लाह के दूत हैं और जो मनुष्य उनके साथ हैं वे काफ़िरों पर कठोर एवं आपस में दयालु हैं तू उनहें देखेगा कि वे रुकू एवं सजदा कर रहे हैं, अल्लाह ताला की कृपा एवं सहमति की जिज्ञासा में हैं, उनका चिन्ह उनके मुखड़ों पर सजदों के कारण हैं, उनका यही उदाहरण तौरात में है एवं उनका यही उदाहरण इंजील में है उस खेती के जैसा जिसने अपना अंखवा निकाला फिर उसे शक्तिशाली बनाया और वह मोटा हो गया फिर अपनी डाली पर सीधा खड़ा हो गया एवं अन्नदाताओं को प्रसन्न करने लगा ताकि इनके कारण वे काफिरों को चिड़ा सकें उन ईमान वालों और पूण्य करने वालों से अल्लाह ताला ने माफी एवं बड़े सवाब का विश्वास दिलाया है." इमाम कुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह इस आयत की व्याख्या करते हुए लिखते हैं: "यह एक उदाहरण है जिसे अल्लाह ताला ने सहाबा के संदर्भ में प्रस्तुत किया है. जिसका अर्थ यह है कि वे पहले बहुत कम संख्या में होंगे, फिर उनकी संख्या अधिक हो जाएगी जब नबी सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने दुर्बलता एवं असमर्थता की स्थिति में मनुष्य को धर्म की ओर आमंत्रण देना प्रारंभ किया तो एक-एक करके लोगों ने आपके इस आमंत्रण को स्वीकार कर लिया यहां तक कि आप का संदेश उस पौधे की तरह शक्तिशाली हो गया जो बीज बोते समय दुर्बल दिखता है फिर स्थिरता के साथ उसमें शक्ति आती जाती है

यहां तक कि उसके सूंढ़ एवं डालियां शक्तिशाली हो जाती हैं इस प्रकार यह एक बहुत ही उपयुक्त उदाहरण सिद्ध हुआ."

सहाबा की महानता एवं उनके उच्च स्थान का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ताला ने उनके बारे में यह सूचना दी है की वे पवित्रता की बात के ज़्यादा निकट थे जैसा कि सूरतु-उल-फतह में वर्णन हुआ:

وَأَلۡزَمَهُمۡ كَلِمَةَ ٱلتَّقۡوَىٰ وَكَانُوٓاْ أَحَقَّ بِهَا وَأَهۡلَهَاۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيماً.(الفتح:26)

अर्थात: "अल्लाह ताला ने मुसलमानों को पवित्रता(तक़वा) की बात पर जमाए रखा एवं वे इसके ज़्यादा योग्य थे, और अल्लाह ताला को प्रत्येक वस्तु के बारे में पूर्णत: ज्ञात है."

इसके अतिरिक्त यह भी सूचना दी है कि यदि लोग उसी तरह ईमान स्वीकार कर लें जिस प्रकार सहाबा ने किया तो वे भी निर्देश को प्राप्त कर लेंगे.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

فَإِنۡ ءَامَنُواْ بِمِثۡلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ . (البقرة:137)

अर्थात: "यदि वे उसी प्रकार ईमान स्वीकार कर लें जैसा कि तुमने किया तो वे भी निर्देश (हिदायत) प्राप्त कर लेंगे."

अल्लाह ताला ने सहाबा के पक्ष में यह गवाही दी है कि वे सत्य एवं ईमान के स्वीकार करने वाले हैं.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهَاجَرُوا۟ وَجَـٰهَدُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلَّذِينَ ءَاوَوا۟ وَّنَصَرُوٓا۟ أُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّاۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ.(الأنفال: 74)

अर्थात: "जिस मनुष्य ने ईमान स्वीकार किया, प्रवासी बने, अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया, जिन्होंने शरण दी, एवं सहयोग किया, यही लोग सत्य मोमिन हैं इनके लिए माफ़ी है एवं प्रतिष्ठा वाली रोज़ी है."

क़ुरआन मजीद में दो स्थानों पर यह वर्णन आया है कि अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया वे दोनों आयतें निम्नलिखित हैं:

(1) ۞ لَّقَدْ رَضِىَ ٱللَّهُ عَنِ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ ٱلشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَـٰبَهُمْ فَتْحاً قَرِيباً.(الفتح:18)

अर्थात: "नि: संदेह अल्लाह ताला मोमिनो से प्रसन्न हो गया जबकि वे पेड़ के नीचे तुझसे प्रतिज्ञा ले रहे थे, उनके हृदय में जो कुछ था उसने उसे ज्ञात कर लिया, उनको शांति एवं संतोष प्रकट किया एवं उन्हें शीघ्र ही सफलता प्रदान की."

दूसरा स्थान सूरह-ए-तौबा है जिसमें वर्णन हुआ कि अल्लाह ताला उनसे प्रसन्न हो गया.

وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلْأَوَّلُونَ مِنَ ٱلْمُهَـٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحْسَـٰنٍ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى تَحْتَهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ خَـٰلِدِينَ فِيهَا أَبَداًۚ ذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ. (التوبة:100)

अर्थात: " जो शरणार्थियों एवं उपयोगीयों (मुहाजिरीन-व-अंसार) भूतपूर्व एवं प्रथम हैं और जितने लोग सत्यता के साथ उनकी आज्ञाकारी हैं अल्लाह उन संपूर्ण लोगों से प्रसन्न हो गया एवं वे सभी लोग भी अल्लाह ताला से खुश हो गए और अल्लाह ताला ने उनके लिए ऐसे बग़ीचे उपलब्ध कर

रखे हैं जिनके नीचे नेहरें बह रही होंगी जिनमें वे सदैव रहेंगे यह बड़ी सफ़लता है."

अल्लाह ताला ने अपने दूत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन सहाबा से परामर्श लेने का आदेश दिया.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

وَشَاوِرۡهُمۡ فِى ٱلۡأَمۡرِۖ فَإِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ.(آل عمران:159)

अर्थात: "कार्यों का परामर्श उन (सहाबा) से क्या करें जब आप की प्रतिबद्धता ठोस हो जाए तो अल्लाह ताला पर विश्वास रखें."

इन के पश्चात आने वाले मुसलमानों को भी यह निर्देश दिया है कि वे उनकी क्षमा या माफ़ी के लिए अल्लाह ताला से प्रार्थना करें एवं मोमिनों के प्रति अपने हृदय में द्वेष न रखें.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِى قُلُوبِنَا غِلّاً لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ. (الحشر:10)

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं एवं इमान वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल ए हमारे रब! नि: संदेह तू कृपालु एवं दयालु है."

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टता के साथ कहा कि सर्वश्रेष्ठ युग सहाबा का युग था, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है:

जिसका अर्थ यह है: "संपूर्ण मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ लोग मेरे युग के लोग हैं फिर जो उनके निकट हैं फिर जो उनके निकट हैं."

(बुख़ारी:2652, मुस्लिम:5233 ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि अल्लाअल्लाहु अनहु सर प्रतिलिपि की है.)

"मेरे संगठन में सर्वश्रेष्ठ लोग वे हैं जिनके समक्ष मेरा अवतार हुआ."

सहाबा के महानता का प्रमाण यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि उनका सवाब उनके पश्चात आने वालों की तुलना में कई गुना अधिक है नबी सल्लल्लाहु वाले वसल्लम का वर्णन है:

" मेरे सहाबा को बुरा भला ना कहो क्योंकि तुम में का कोई उहुद पर्वत के बराबर भी स्वर्ण दान कर दे तो वह उनके मुद अथवा उसके अर्ध के बराबर भी नहीं पहुंच सकता."

(इसे बुख़ारी:3673, एवं मुस्लिम:2541 ने अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से प्रतिलिपि किया है एवं इसी अर्थ की हदीस अबू हुरैरा राज़ि अल्लाहू अन्हु से भी प्रतिलिपि की गई है जिसको इमाम मुस्लिम:2540 ने प्रतिलिपि किया है)

इस हदीस में "नसीफ़" एक शब्द आया है जिसका अर्थ अर्ध है एवं मुद एक सा-अ के चौथे पार्ट को कहते हैं.

इसका अर्थ यह है कि सहाबी का दान पूण्य यदि एक मुद हो तो उसका फल उसके पश्चात आने वाले लोगों के दान पूण्य के फल से कहीं बढ़कर है, चाहे उनका दान पुण्य उहुद पर्वत के बराबर ही क्यों ना हो. इस अंतर

का कारण यह है कि सहाबी के भीतर अनंत प्रेम, निष्कपट (इख़्लास) एवं उनके हृदय में असीन सत्यता थी.

सारांश यह है कि सहाबा को अन्य मनुष्यों पर १० विशेषताओं के कारण इस प्रकार उच्च स्थान प्राप्त है:

(१) अल्लाह ने उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में रहने का अवसर दिया.

(२) उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने एवं संगत में रहने का सौभाग्य प्राप्त है.

(३) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे प्रेम करते थे.

(४) वे सर्वश्रेष्ठ लोग थे.

(५) उनकी महानता का उल्लेख तौरात इनजील एवं कुरआन में हुआ एवं उन सभी पुस्तकों में उनकी प्रशंसा की गई है.

(६) उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की.

(७) उन्होंने अल्लाह, इस्लाम धर्म, एवं नबी के लिए अपनी प्राण, संपत्ति एवं संतान तक को त्याग दिया. उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उत्साहित किया एवं आपके ठोस विचार में किसी प्रकार का लचीलापन नहीं आने दिया एवं इस्लाम धर्म के सदैव जीवित रखने के लिए संपूर्ण कठिनाइयों को सहा.

(८) वे उन संपूर्ण सराहनीय विशेषताओं से प्रदर्शित थे जिनको उन्होंने भविष्यवक्ता के दीपक से परोक्ष रूप से प्राप्त किया था एवं प्रशिक्षित हुए थे.

(९) उन्होंने क़ुरआन एवं हदीस को अपने हृदय में सुरक्षित किया और समस्त संसार तक पहुंचाया और उन्हीं सहाबा के कारण प्रलय की दिवस तक संसार में इस्लाम धर्म फलता फूलता रहेगा.

(१०) वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात अल्लाह के धर्म के सबसे ज़्यादा ज्ञानी थे. जिस बात को वे सामूहिक रूप में कह देते थे कोई भी उसका विरोध नहीं कर सकता था.

यह वे १० विशेषताएं हैं जिनके कारण सहाबा को अपने से पूर्व एवं अपने से पश्चात संपूर्ण व्यक्तियों पर प्रभुत्व प्राप्त था. अल्लाह ताला मुझे एवं आप को पवित्र क़ुरआन की बरकत से समृद्धि प्रदान करे. मुझे एवं आपको इस की आयतों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सदुपदेशों का लाभार्थी बनाए. मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने एवं आप सभी के लिए हर प्रकार के दंड एवं पाप से क्षमा के लिए अनुरोध करता हूं.आप भी अल्लाह से क्षमा की भीख मांगें.

नि: संदेह वह अधिक से अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं क्षमा करने वाला है.

दूसरा भाषण:

मुसलमानो! सहाबा अपनी महानता में दूसरे से विभिन्न हैं. अहले सुन्नत वल जमात इस बात में विश्वास रखते हैं कि नबी के पश्चात इस उम्मत में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अबु बक्र हैं, फिर उमर, फिर उस्मान एवं फिर अली हैं. अहले सुन्नत वल जमात अंसार के विपरीत मुहाजिरीन को उच्च स्थान देते हैं क्योंकि मुहाजिमुहाजिरों (शरणार्थियों) ने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की थी फिर उनके पश्चात अंसार का स्थान है जिन्होंने इस्लाम स्वीकार करने के साथ-साथ अल्लाह के दूत नबी सल्ला वसल्लम को शरण भी प्रदान किया था एवं सहयोग किया था. अहले सुन्नत वल जमात सफ़लता (फ़तहे हुदैबिया) से पूर्व दान प्रदान करने वालों उच्च स्थान स्थान देते हैं उन लोगों के विपरीत जिन्होंने सफ़लता के पश्चात दान प्रदान किया था एवं युद्ध किया था.

वे इस बात में विश्वास रखते हैं कि बदर युद्ध लड़ने वाले जिनकी कुल संख्या ३१३ थी उनके संबंध में अल्लाह ताला का वर्णन है:" तुम जो चाहो करो मैं ने सामूहिक तौर पर तुम सबको क्षमा कर दिया है." वे इस बात में भी आस्था रखते हैं कि पेड़ के नीचे प्रतिज्ञा करने वालों में से कोई भी नरक में नहीं जाएगा जिनकी कुल संख्या १४०० से अधिक थी. वे उनके लिए स्वर्ग की गवाही देते हैं जिनके लिए अल्लाह के दूत ने गवाही दी जैसे: अशरह-ए-मुबश्शरा (१० भाग्यशाली व्यक्ति जिन को स्वर्ग में जाने की सूचना दी गई.) एवं अन्य सहाबा.

ए मोमिनो! सहाबा के हम पर ४ अधिकार हैं:

(१) उन से प्रेम करना एवं उन से प्रसन्न रहना जैसा कि अल्लाह ताला ने मोमिनो को आदेश देते हुए कहा:

وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَـٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِى قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ. (الحشر:10)

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं एवं इमान वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल ए हमारे रब! नि: संदेह तू कृपालु एवं दयालु है."

(२) इस बात ने आस्था रखना कि वे धार्मिक क्रियाओं के उम्मत में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी थे क्योंकि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निरीक्षण में प्रशिक्षण प्राप्त किया था एवं कुरआन के अवतार को उन्होंने देखा था और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात की भी सूचना दी कि उनमें चार प्रथम सहाबा (ख़ुलाफा-ए- राशिदीन) की सुन्नत पालन के योग्य है बाद में आने वालों को चाहिए कि वे उनकी प्रक्रियाओं का पालन करें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है: "मैं तुमको अल्लाह से भय रखने एवं शासक की बात सुनने अथवा उनकी आज्ञा कारिता करने का आदेश देता हूं चाहे शासक कोई कटे हुए पार्ट वाला हब्शी दास ही क्यों न हो, क्योंकि तुम में से जो जीवित रहेगा वह उम्मत के भीतर अनेक झगड़े देखेगा तो तुम जीवित लोगों को मेरा इच्छा पात्र है की नौविद्रोहों एवं नवाचारों में ना पड़ना क्योंकि यह सब पथभ्रष्ट हैं. इस कारणवश तुम में से जो भी उस युग को देखे वह मेरे एवं मेरे आज्ञाकारीयों

(ख़ुलाफा-ए- राशिदीन) के सिद्धांतों पर डटा रहे एवं मेरे उन सदुपदेशों को अपने दंतो से कठोरता के साथ पकड़े रहे.

(३) कुछ नवोन्मेषों जैसे रवाफ़िज़ एवं उन सिद्धांतों पर चलने वाले लोग जो कुछ सहाबा के संदर्भ में कहते हैं इस बारे में सहाबा की रक्षा करना.

यह ज्ञात रखें -अल्लाह आप संपूर्ण पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आप सभी को एक महान कार्य का आदेश दिया:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.(الأحزاب:56)

अर्थात: " अल्लाह ताला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो.

अल्लाह के श्रद्धालुओ!

अल्लाह ताला न्याय का, भलाई का, अपनों के साथ सत्य व्यवहार करने का, आदेश देता है एवं असभ्यता वाले कार्यों से, अभद्र चालों से, कुर्ता एवं दुरुपयोगों से रोकता है. महान अल्लाह को याद करो वह भी तुमको याद करेगा उसकी दी हुई लाभदायक वस्तुओं पर उसके आभारी रहो वह तुम को और अधिक देगा नि: संदेह अल्लाह ताला को याद करना बहुत बड़ी चीज़ है एवं अल्लाह हमारे कार्यों के बारे में पूर्णत: ज्ञात रखता है.

लेखक: माजिद बिन सुलैमान, 5 रबीउस्सानी, १४४२ हिजरी, जूबैल,सऊदी अरब।